कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर
बिखरते पत्थरों की चीख़?

14.2.3 अंश-3

आपने पेड़ों, नदियों और पर्वतों से संबंधित अनेक कथाएँ सुनी होंगी। बहुत पहले से ही हमारी कथाओं में इनका मानवीकरण किया जाता रहा है। पर्वतों के बारे में तो यह कल्पना भी की गई है कि उनके पंख होते थे। वे इधर-उधर उड़ते फिरते थे। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में पहाड़ के मानवीकरण का उद्देश्य अलग ही है। आइए, इसे समझें।

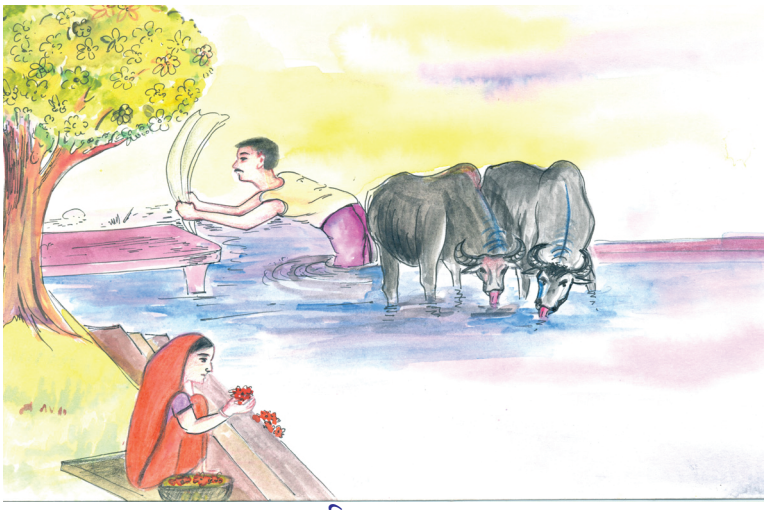

चित्र 14.3

जिस तरह कविता में पहले कुछ सुनने, कुछ देखने और कुछ सोचने का आग्रह किया गया है, वैसे ही कुछ महसूस करने पर भी बल दिया गया है। गिरते हुए पेड़ की धमस के संदर्भ में भी महसूस करने का एक रूप आ चुका है। इस अंश में पहाड़ की भयंकर यातना को महसूस करने का आग्रह किया गया है। आपने मनुष्य के लिए तो 'दिल दहलना' का प्रयोग सुना ही होगा। जब कोई भयानक स्थिति या विपत्ति आती है तो उसे देखकर या उसका सामना करते हुए व्यक्ति का दिल दहलता है अर्थात् वह भीतर तक हिल जाता है या काँप जाता है।

पहाड़ मौन समाधि लिए बैठा है अर्थात् विशाल पहाड़ की स्थिरता को देखकर लगता है, जैसे वह मौन समाधि में बैठा हो। अनेक चित्रों में आपने ऋषि-मुनियों को इस तरह बैठे देखा होगा। पहाड़ भी इस मुद्रा में बैठे दिखते हैं न? कवयित्री की इस सुंदर कल्पना को असुंदर बनाता है– मनुष्य का पहाड़ के साथ किया गया व्यवहार। मनुष्य एक तरफ़ निर्माण करता है, तो दूसरी तरफ़ विनाश भी करता है। मनुष्य ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने के लिए पत्थर, सीमेंट आदि पाने को पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट करता है। जब पहाड़ विस्फोट से टूटता है, तो ऐसा लगता है, मानो मनुष्य के इस व्यवहार से उसका सीना दहल गया हो। कोई ठोस चीज़ बहुत तेज़ आघात या चोट से टूटती है, तो उसके कुछ टुकड़े तेज़ गति से बहुत दूर तक इधर-उधर जा गिरते हैं। इसे इन टुकड़ों का छिटकना कहते हैं। पहाड़ के सीने पर मनुष्य तेज आघात करता है, इससे उसके पत्थर छिटककर दूर गिरते हैं। कविता की इन पंक्तियों में पहाड़ के प्रति मनुष्य के क्रूर व्यवहार की ओर संकेत किया गया है।

टिप्पणी

पिछले अंश में कवयित्री ने नदियों की रुलाई सुनने का आग्रह किया है, तो इस अंश में हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़ को सुनने का।

यह भी जानिए

- क्या आप जानते हैं कि पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बना सकते हैं। वर्षा के जल का संरक्षण करके और तालाब-बावड़ियाँ बनाकर या उन्हें बचाकर पानी की कमी को दूर कर सकते हैं। लेकिन, यदि पहाड़ एक बार नष्ट हो गए, तो उन्हें फिर से उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
- पहाड़ को प्राचीन समय में ही 'भूधर' नाम दे दिया गया था। भूधर का अर्थ है- भूमि को धारण करने वाला। यदि पहाड़ न हों, तो धरती के भीतर होने वाली हलचलें, गतिविधियाँ, गैसें आदि धरती को नष्ट कर सकती हैं। पहाड़ इन आंतरिक हलचलों से धरती की रक्षा करते हैं। वे इन विनाशकारी हलचलों को ज्वालामुखी तथा अपने शिखरों के माध्यम से बाहर निकाल देते हैं, इसलिए उन्हें 'भूधर' कहा जाता है।
- पहाड़ों के जंगल से लकड़ी के साथ-साथ बहुमूल्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं।

क्रियाकलाप-14.2

पर्वत मनुष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है। विशालता, महानता और हौसले के लिए पर्वत जैसी उपमा किसी और से नहीं दी जा सकती। ऊँचाई और बड़प्पन के संदर्भ में भी पर्वत की बात की जाती है, कुछ मुहावरे देखिए:

- पहाड़ टूटना
- पहाड़ से टक्कर लेना
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया

कम-से-कम तीन ऐसे मुहावरे लिखिए, जिनमें पहाड़ या पर्वत की विशालता का उल्लेख हो।

1.....2.....3.....

14.2.4 अंश-4

आपने सुना होगा कि ख़ून की उल्टियाँ एक भयंकर रोग का लक्षण होती हैं। वह भयंकर रोग है– टी.बी.। अर्थात् ट्यूबर क्लोसिस। इसे क्षय रोग, यक्ष्मा या तपेदिक भी कहते हैं। यह प्राय: फेफड़ों का रोग है और तब होता है, जब फेफड़ों को स्वच्छ वायु न मिले।

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने
घर के पिछवाड़े

वायु-प्रदूषण का कारण क्या है? बड़े-बड़े कारखाने, उनमें बड़ी-बड़ी मशीनें, धुआँ उगलती चिमनियाँ, सड़कों पर वाहनों की लंबी-लंबी कतारें। वायु-प्रदूषण से खुद वायु ही रोगी हो जाती है, इसीलिए कवयित्री ने हवा को ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है।

कविता के इस अंश में एक शब्द आया है- पिछवाड़े। यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग विशेष उद्देश्य से किया गया है। आप इस शब्द का अर्थ तो जानते ही होंगे, जी हाँ- घर के पीछे का हिस्सा। हमारा सारा ध्यान मुख्य द्वार की सजावट और सफ़ाई पर रहता है। पिछवाड़े की हम चिंता नहीं करते। वहाँ कूड़ा फेंकते हैं। इससे गंदगी-बदबू फैलती है। इसी प्रकार, मनुष्य विकास के बड़े-बड़े दावे करता है। अपनी उपलब्धियाँ गिनाता है। जो सुविधाएँ उसने प्राप्त की हैं, उनको बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है। लेकिन, दीखना एक बात है और होना कुछ और। कबूतर के आँख मूँदने से जैसे बिल्ली उसे खाना नहीं छोड़ देती, वैसे ही बाहर की सफ़ाई भीतर की गंदगी को कम नहीं कर सकती और उसके दुष्परिणामों से हमें बचा नहीं सकती। इन पंक्तियों में विकास-कार्यों से फैलने वाली गंदगी अर्थात् प्रदूषण की आलोचना की गई है। प्रदूषित हवा गंभीर रोगों का कारण बनती है। इसीलिए, यहाँ हवा को प्रदूषित होने से बचाने का आग्रह है।

पाठगत प्रश्न-14.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हृदय-विदारक का अर्थ देने वाला मुहावरा कौन-सा है-

   (क) सीने पर पहाड़ रखा होना ☐ (ख) छाती पर साँप लोटना ☐

   (ग) दिल दहलना ☐ (घ) कलेजे पर पत्थर रखना ☐

2. 'ख़ून की उल्टियाँ करते... अपने घर के पिछवाड़े' पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री-

   (क) चंद लोगों के विकास की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है। ☐

   (ख) घर के पिछले भागों को साफ़-सुथरा रखने का आग्रह करती है। ☐

   (ग) प्रकृति पर मनुष्य की विजय का उद्घोष करती है। ☐

   (घ) (क) और (ग) दोनों ☐

3. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) हमें जल का उपयोग करते हुए भावी पीढ़ी का ध्यान रखना चाहिए। ☐

टिप्पणी

(ख) कवयित्री ने विकास के लिए पहाड़ों को विस्फोट से उड़ाना मनुष्य की मजबूरी बताया है। ☐

(ग) पहाड़ पृथ्वी की रक्षा के लिए आवश्यक हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' भी कहते हैं। ☐

(घ) व्यक्तिगत स्वार्थ प्राकृतिक संसाधनों का सबसे बड़ा दुश्मन है। ☐

14.2.5 अंश-5

आइए, कविता की अंतिम पाँच पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में कवयित्री ने पृथ्वी को बूढ़ी औरत के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके दुख को प्रकट किया है। साथ ही मनुष्य होने का वास्तविक अर्थ भी बताया है।

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

हम देखते हैं कि आजकल अधिकतर लोग ज़्यादा से ज़्यादा सुविधाएँ प्राप्त करने की होड़ में व्यस्त हैं। इसी के चलते उन लोगों ने अपने लिए अनेक उलझनें खड़ी कर ली हैं। अब उनके पास मानवीय तथा बेहद ज़रूरी कार्यों के लिए भी समय नहीं है। इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। अपने आस-पास के कुछ घरों में बुज़ुर्गों को देखें- उन्होंने अपनी संतान को पाल-पोस कर बड़ा किया और अब उनकी संतान के पास इतना भी समय नहीं है कि वह उनकी देखभाल और सेवा कर सके, उनसे बात करके उनका दुख-सुख पूछे। ऐसे में ये बड़े-बूढ़े बहुत उदास, चुप तथा दुखी रहते हैं। इन बुज़ुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गयी है।

इस कविता का शीर्षक ही है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख।' सवाल उठता है कि पृथ्वी को यहाँ पर बूढ़ी क्यों कहा गया है? इसलिए कि यदि पेड़-पौधे कम हो रहे हों, नदियाँ सूख रही हों, पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा हो, पानी गंदा हो रहा हो, हवा प्रदूषित हो रही हो तो पृथ्वी कैसी लगेगी? बूढ़ी ही लगेगी न? वास्तव में, मुँह ढाँपकर रोने और पिछवाड़े खाँसने वाली भी यही 'बूढ़ी' है, क्योंकि नदी, पेड़, हवा आदि इसी पृथ्वी के अंग हैं। हम देखते हैं कि शरीर का ध्यान न रखने से बुढ़ापे में दाँत गिर जाते हैं, शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, केश सफ़ेद हो जाते हैं, शरीर रोगी हो जाता है। इसी प्रकार हरियाली, शुद्ध पानी, स्वच्छ हवा, विशाल पर्वतों के बिना धरती भी बंजर, रूखी और रोगी हो जाती है। मनुष्य अपने आपको चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ बनाए रखने के लिए अनेक उपाय करता है। वह सुबह-शाम सैर करता है, व्यायाम करता है और खान-पान का ध्यान रखता है। क्या उसे इतना ही ध्यान धरती का भी नहीं रखना चाहिए? मनुष्य चाहे तो धरती को असमय के बुढ़ापे से बचा सकता है अर्थात् हरा-भरा और प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न बना सकता है।

क्रियाकलाप-14.3

वायु-प्रदूषण के कुछ कारणों के विषय में आप जान चुके हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हो सकते हैं, जिन्हें आप अपने आस-पास देखते हैं। इनमें से किन्हीं दो का उल्लेख करते हुए उन्हें रोकने के लिए पोस्टर तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

14.3 भाव-सौंदर्य

आइए, एक बार पूरी कविता को एक साथ पढ़कर उस पर विचार करें। इस कविता में अनेक प्रश्न हैं। इन प्रश्नों को एक बार फिर से याद कीजिए। इन प्रश्नों के माध्यम से कुछ सुनने, देखने, महसूस करने, सोचने और थोड़ा-सा समय निकालकर बतियाने का आग्रह किया गया है। भला किनके बारे में? ज़ाहिर है कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा के बारे में और मूल रूप से उस पृथ्वी के बारे में, जिसके ये सब अवयव / अंग हैं। पेड़ विपत्ति में हैं, नदी ... पहाड़ धैर्यवान सज्जन के रूप में हैं, हवा रोगी है, तो पृथ्वी बूढ़ी। आप जानते हैं कि मनुष्य को प्रकृति की सर्वोत्तम रचना माना जाता है। क्यों? इसलिए कि मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, और है संवेदनशीलता। इसी संवेदनशीलता के चलते मानव-मूल्यों का निर्माण हुआ है। विपत्ति में पड़े हुए, सज्जन, रोगी और बुज़ुर्ग की रक्षा करना, उनकी सेवा करना मानव-धर्म है। कवयित्री कहती है कि यदि तुमने यह सब नहीं किया, तो क्षमा करना, मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है! जानते हैं ऐसा कवयित्री ने क्यों कहा? क्योंकि मनुष्य से ही आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे। ऐसी संवेदनशीलता मनुष्य में ही होती है।

लेकिन, यह संदेह कवयित्री ने बड़ी ही विनम्रता से, समझाने के अंदाज़ में किया है। वह क्षमा माँगते हुए यह बात कहती है कि वह यह बात कहना तो नहीं चाहती, पर धरती पर आए संकट के कारण उसे विवश होकर यह कहना पड़ रहा है।

14.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता में भावों को कहने के लिए कम-से-कम शब्दों का उपयोग किया गया है। आपने यह भी देखा कि आरंभ से अंत तक बातचीत की शैली है। कवयित्री अपने पाठक को संबोधित करती है। वह पाठक से अनेक प्रश्न पूछती है। अर्थात्, कविता प्रश्न-शैली में है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये सामान्य ढंग के प्रश्न नहीं हैं। प्रश्नों को पूछने की शैली ऐसी है कि इनमें कवयित्री का सुझाव निहित है। वह अपने पाठकों से चाहती है कि वे कुछ करें। वह कुछ क्या है, यह आप समझ ही चुके हैं।

टिप्पणी

कभी-कभी बातचीत करते हुए आप भी सुनने वाले के सामने प्रश्न के माध्यम से किसी कार्य को करने का प्रस्ताव रखते होंगे। जैसे, आप किसी से कहें- 'क्या तुमने ताजमहल देखा है?' तो आपकी इच्छा यह होती है कि सुनने वाला ताजमहल देखे। 'क्या तुम शाम को आ सकते हो?' 'क्या तुम पटना जा सकते हो?', 'क्या आपके पास पेन है?' आदि वाक्य ऐसे ही हैं। कवयित्री ने इस शैली का उपयोग पूरी कविता में किया है। इस शैली से कविता का प्रभाव और सौंदर्य बढ़ गया है। यह शैली कविता के उद्देश्य को व्यक्त करने में भी सहायक है।

आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि इस कविता में दृश्यात्मकता है अर्थात् इसकी पंक्तियाँ चित्रों का काम करती हैं। जैसे- कुल्हाड़ियों के भय से चीत्कार करते पेड़, पेड़ की हिलती टहनियों में बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ, मुँह ढाँपकर रोती नदी, मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना, खून की उल्टियाँ करती हवा और गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी। इस चित्रात्मकता का बहुत बड़ा कारण इन स्थलों पर प्रयुक्त मानवीकरण भी है।

कविता के अंतिम अंश में कवयित्री ने क्षमा माँगी है। आपको लग सकता है कि कवयित्री ने तो ऐसा कोई काम किया नहीं कि क्षमा माँगनी पड़े। वास्तव में यह सुनने वाले की आलोचना करने, उसकी कमी बताने और उसे नसीहत या शिक्षा देने का एक ढंग है। जब आप अपने से बड़े और छोटे तथा बराबर वाले से सहमत नहीं होते, तो ऐसे प्रयोग करते हैं, जैसे-

क्षमा कीजिएगा! आपकी यह बात ठीक नहीं। (बड़े से)

क्षमा करना! तुम यह ठीक नहीं कर रहे। (बराबर वाले या छोटे से)

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में कवयित्री ने भावों के अनुकूल भाषा-प्रयोग किया है। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं- चीत्कार, पुकारते, धमस, रात का सन्नाटा, दहलना, चीख़, गुमसुम आदि भाव-विशेष की अभिव्यक्ति करते हैं। एक शब्द है-'बतियाना'। 'बात' संज्ञा शब्द है। इस 'बात' से 'बतियाना' बना है। संज्ञा को 'नाम' भी कहते हैं। यहाँ संज्ञा शब्द बात का प्रयोग क्रिया की 'धातु' के रूप में हुआ है, अतः यह 'नाम धातु क्रिया' है। ऐसे ही अन्य शब्दों पर गौर करें :

धकियाना (धक्का से), लतियाना (लात से), हथियाना (हाथ से) आदि।

पाठगत प्रश्न-14.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

(क) मानवीकरण (ख) प्रश्न शैली

(ग) दृश्यात्मकता (घ) ओजस्विता

2. मानवीकरण नहीं है-

(क) पेड़ों का चीत्कार (ख) नदियों का रोना

(ग) मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ (घ) पेड़ की हिलती टहनियाँ

आपने क्या सीखा

- पर्यावरण मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण के असुंतलित होने से मानव-जीवन पर अनेक रूपों में संकट आता है।
- पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाना मनुष्य का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मानव सहित सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है और पृथ्वी के सौंदर्य को बचाया जा सकता है।
- साहित्य में सवंदेनशीलता तथा समानुभूति का बहुत महत्त्व है। इस कविता में पाठकों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाकर पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की गई है।
- उपभोक्तावाद तथा व्यक्तिगत स्वार्थ मानव-विरोधी भाव हैं। कविता में इनका विरोध करके बहुसंख्यक मानव की रक्षा की भावना मार्मिकता से व्यक्त की गई है।
- जो मानव नहीं है या जड़ है, उसे मनुष्य के रूप में दिखाना मानवीकरण है। इस कविता के उद्देश्य को पूरा करने में मानवीकरण की बहुत बड़ी भूमिका है।
- कविता में उपयुक्त वाक्य-विधान, प्रश्न-शैली, दृश्यात्मकता एवं भावानुकूल भाषा-प्रयोग है।

योग्यता विस्तार

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता की लेखिका निर्मला पुतुल हैं। उनका जन्म 1972 में एक संथाली आदिवासी परिवार में हुआ। निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में उस आदिवासी लोक की रचना करती हैं, जो प्रकृति के सबसे अधिक निकट रहता है, उससे आत्मीयता का अनुभव करता है और जो प्रकृति के महत्त्व को सबसे अधिक समझता है। इस प्रकार अपनी कविताओं के माध्यम से निर्मला पुतुल आदिवासी समाज और प्रकृति के अस्तित्त्व को बचाने का प्रयास करती हैं। आज वैश्विक सभ्यता तथा उपभोक्तावाद के दौर में ये दोनों ही संकटग्रस्त हैं। निर्मला पुतुल हमारे एकांगी राष्ट्रीय विकास पर प्रश्नचिह्न लगाकर सभी के लिए विकास की माँग करती हैं। निर्मला पुतुल ने स्त्री-प्रश्नों पर भी कविताएँ लिखी हैं। उनके कविता-संग्रह का नाम है- 'नगाड़े की तरह बजते शब्द'।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. पर्यावरण का अर्थ लिखिए। हमें पर्यावरण की रक्षा करने का दायित्व क्यों निभाना चाहिए?

2. प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से होने वाली हानियों का उल्लेख कीजिए।

3. संवेदनशीलता का विस्तार करने में कवियों की क्या भूमिका है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। आप किस माध्यम से यह कार्य कर सकते हैं- यह भी लिखिए।

4. पानी के प्रदूषण के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए। उन कारणों के निदान के बारे में टिप्पणी कीजिए।

5. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण किस प्रकार किया गया है- उल्लेख कीजिए।

6. मनुष्य के प्रकृति-विरोधी व्यवहार को मानव-विरोधी व्यवहार क्यों कहा जा सकता है- उल्लेख कीजिए।

7. 'दिल दहलना', 'हृदय विदारक' और 'छिटकना' का उचित प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य लिखिए।

8. उपयुक्त मिलान कीजिए :

सुनना	बूढ़ी पृथ्वी का दुख
देखना	हवा का ख़ून की उल्टियाँ करना
महसूस करना	नदियों का मुँह ढाँपकर रोना
बतियाना	पहाड़ का सीना दहलना

9. संज्ञा शब्द वे शब्द हैं, जो किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम के लिए प्रयुक्त होते हैं। संज्ञा की विशेषता बताने वाले रूप को विशेषण कहते हैं। क्रिया से किसी कार्य को करने का या किसी स्थिति में होने का बोध होता है। कभी-कभी कार्य अथवा कार्य करने की रीति भी संज्ञा के विशेषण के रूप में होती है। निम्नलिखित में से किस विकल्प में कार्य करने की रीति संज्ञा के विशेषण के रूप में नहीं है-

   (क) कुल्हाड़ियों के वार सहते पेड़

   (ख) बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ

   (ग) मौन समाधि के लिए बैठे पहाड़ का सीना।

   (घ) हवा घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करती है।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

14.1

1. (क), 2. (क), 3. (ख), 4. (क) (√), (ख) (√), (ग) (×), (घ) (×)

14.2

1. (क), 2. (क), 3. (क), (√), (ख) (×), (ग) (√), (घ) (√)

14.3

1. (घ), 2. (घ)